पाठ – वन के मार्ग में

शब्दार्थ –

1. पुर - नगर
2. निकसी - निकलीं
3. रघुवीर वधू - सीता जी
4. मग - रास्ता
5. डग - कदम
6. ससकी - दिखाई दी
7. भाल - मस्तक
8. कनी - बूँदें
9. पुट - होंठ
10. केतिक - कितना
11. पर्णकुटी - पत्तों की बनी कुटिया (तत्पुरुष समास)
12. कित - कहाँ
13. तिय - पत्नी
14. चरू - सुन्दर
15. च्वै - गिरना
16. लरिका - लड़का
17. परिखौ - प्रतीक्षा करना
18. घटीक - एक घड़ी समय
19. ठाढें - खड़े होना
20. पसेउ - पसीना
21. बयारि - हवा
22. पखारिहौं - धोना
23. भूभुरी - गर्म रेत
24. कंटक - काँटे
25. काढ़ना - निकालना
26. नाह - स्वामी (पति)
27. नेहु - प्रेम
28. लख्यो - देखकर
29. वारि - पानी

egyanarchive

30.विलोचन - आँखें

कविता सार - "वन के मार्ग में" में तुलसीदास जी ने अवधी में तब का प्रसंग बताया है, जब श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी वनवास के लिए निकले थे। नगर से थोड़ी दूर निकलते ही सीता जी थक गईं, उनके माथे पर पसीना छलक आया और उनके होंठ सूखने लगे। जब लक्ष्मण जी पानी लेने जाते हैं, तो उस दशा में भी वे श्री राम से पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए कहती हैं। राम जी उनकी इस दशा को देखकर व्याकुल हो उठते हैं और सीता जी के पैरों में लगे काँटे निकालने लगते हैं। यह देखकर सीता जी मन ही मन अपने पति के प्यार को देखकर पुलकित होने लगती हैं।

व्याख्या -

१- पुर तें निकसीं रघुबीर–बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं, "चलनो अब केतिक, पर्नकुटि करिहौं कित ह्वै?"
तिय की लखि आतुरता पिय की अंखियां अति चारु चलीं जल च्वै।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक **'वसंत भाग-०१'** के पाठ **'वन के मार्ग में'** से लिया गया है। इस पाठ के लेखक **'तुलसीदास जी'** है।

व्याख्या - कविता में तुलसीदास जी लिखते हैं कि श्री राम जी के साथ उनकी वधू अर्थात् सीता जी अभी नगर से बाहर निकली ही हैं कि उनके माथे पर पसीना चमकने लगा है। इसी के साथ-साथ उनके मधुर होंठ भी प्यास से सूखने लगे हैं। अब वे श्री राम जी से पूछती हैं कि हमें अब पर्णकुटी (घास-फूस की झोंपड़ी) कहाँ बनानी है। उनकी इस परेशानी को देखकर राम जी भी व्याकुल (परेशान) हो जाते हैं और उनकी आँखों से आँसू छलकने लगते हैं।

egyanarchive

जल को गए लक्खनु, हैं लरिका परिखौं, पिय! छांह घरीक ह्वै ठाढ़े।।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं, भूभुरि-डाढ़े।।"
तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाह को नेह लख्यो, पुलको तनु, बारिश बिलोचन बाढ़े।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक **'वसंत भाग-०१'** के पाठ **'वन के मार्ग में'** से लिया गया है। इस पाठ के लेखक **'तुलसीदास जी'** है।

व्याख्या - इस पद में जब लक्ष्मण जी पानी लेने जाते हैं, तब सीता जी श्री राम से कहती हैं कि स्वामी आप थक गए होंगे, अतः पेड़ की छाया में थोड़ा विश्राम कर लीजिए। श्री राम जी उनकी इस व्याकुलता को देखकर कुछ देर पेड़ के नीचे विश्राम करते हैं तथा फिर सीता जी के पैरों से काँटे निकालने लगते हैं। अपने प्रियतम के इस प्यार को देखकर सीता जी मन ही मन पुलकित (खुश) होने लगती हैं।

प्रश्न-अभ्यास

सवैया से

प्रश्न 1. नगर से बाहर निकलकर दो पग चलने के बाद सीता की क्या दशा हुई?

उत्तर-

नगर से बाहर निकलकर दो पग अर्थात थोड़ी दूर चलने के बाद सीता जी के माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगीं। उनके कोमल ओठ सूख गए। वे शीघ्र ही थक गईं।

प्रश्न 2. 'अब और कितनी दूर चलना है, पर्णकुटी कहाँ बनाइएगा'-किसने, किससे पूछा और क्यों?

उत्तर-

'अब और कितना दूर चलना है? और पर्णकुटी कहाँ बनायेंगे? ये शब्द सीता जी ने श्रीराम से पूछे क्योंकि वे बहुत अधिक थक गई थीं।

प्रश्न 3. राम ने थकी हुई सीता की क्या सहायता की?

उत्तर-

राम ने जब देखा कि सीता थक चुकी हैं, तो वह देर तक बैठकर पैरों से काँटे निकालते हैं, जिससे सीता को कुछ देर आराम करने का मौका मिल जाए और उनकी थकान कम हो जाए।

प्रश्न 4. दोनों सवैयों के प्रसंगों में अंतर स्पष्ट करो।

उत्तर-

पहले सवैये में वन जाते समय सीता जी की व्याकुलता एवं थकान का वर्णन है। वे अपने गंतव्य के बारे में जानना चाहती हैं। पत्नी सीता की ऐसी बेहाल अवस्था देखकर रामचंद्र जी भी दुखी हो जाते हैं। जब सीता नगर से बाहर कदम रखती हैं तो कुछ दूर जाने के बाद काफ़ी थक जाती हैं। उन्हें पसीना आने लगता है और होंठ सूखने लगते हैं। वे व्याकुलता से श्रीराम से पूछती हैं कि अभी और कितना चलना है तथा पर्णकुटी कहाँ बनाना है? इस तरह सीता जी की व्याकुलता को देखकर श्रीराम की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

दूसरे सवैये में श्रीराम और सीता की दशा का मार्मिक चित्रण है। इस प्रसंग में श्रीराम व सीता जी के प्रेम को दर्शाते हुए कहा गया है कि कैसे श्रीराम सीता के थक जाने पर अपने पैरों के काँटे निकालते हैं और सीता जी श्रीराम का अपने प्रति प्रेम देखकर पुलकित हो जाती हैं।

प्रश्न 5. पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में करो।

उत्तर-

वन का मार्ग अत्यंत कठिन था। यह मार्ग काँटों से भरा था। उस पर बहुत सँभलकर चलना पड़ रहा था। रहने के लिए कोई

egyanarchive

सुरक्षित स्थान नहीं था। रास्ते में खाने की वस्तुएँ नहीं थीं। पानी मिलना भी कठिन था। चारों तरफ सुनसान तथा असुरक्षा का वातावरण था।

अनुमान और कल्पना

गरमी के दिनों में कच्ची सड़क की तपती धूल में नंगे पाँव चलने पर पाँव जलते हैं। ऐसी स्थिति में पेड़ की छाया में खड़ा होने और पाँव धो लेने पर बड़ी राहत मिलती है। ठीक वैसे ही जैसे प्यास लगने पर पानी मिल जाए और भूख लगने पर भोजन। तुम्हें भी किसी वस्तु की आवश्यकता हुई होगी और कुछ समय बाद पूरी हो गई होगी। तुम सोचकर लिखो कि आवश्यकता पूरी होने के पहले तक तुम्हारे मन की दशा कैसी थी?

उत्तर-

किसी वस्तु की आवश्यकता पूरी होने से पहले मन उसके लिए बेचैन तथा व्याकुल रहता है। हम बार-बार उस वस्तु के विषय में सोचते रहते हैं तथा उसे पाने के अनेक प्रयास करते हैं। किसी दूसरे काम में मन नहीं लगता।

भाषा की बात

प्रश्न 1. लखि-देखकर।

धरि-रखकर।

पोंछि-पोछकर।

जानि-जानकर।

ऊपर लिखे शब्दों और उनके अर्थ को ध्यान से देखो। हिंदी में जिस उद्देश्य के लिए हम क्रिया में 'कर' जोड़ते हैं, उसी के लिए अवधी में क्रिया में f (इ) को जोड़ा जाता है, जैसे-अवधी में बैठ + ि = बैठि हिंदी में बैठ + कर = बैठकर। तुम्हारी भाषा या बोली में क्या होता है? अपनी भाषा के ऐसे छह शब्द लिखो। उन्हें ध्यान से देखो और कक्षा में बताओ।

उत्तर-

मेरी भाषा हिंदी खड़ी बोली है पर भोजपुरी में निम्नलिखित उद्देश्य के लिए अलग क्रिया के साथ 'के' का प्रयोग करते हैं जैसे

२- देखकर – ताक के

३- बैठकर – बइठ के।

४- रुककर – ठहर के।

५- सोकर – सुत के

६- खाकर – खा के।

७- पढ़कर – पढ़ के।

egyanarchive

प्रश्न 2. "मिट्टी का गहरा अंधकार, डूबा है उसमें एक बीज।'

उसमें एक बीज डूबा है। जब हम किसी बात को कविता में कहते हैं तो वाक्य के शब्दों के क्रम में बदलाव आता है; जैसे- "छाँह घरीक वै ठाढ़े" को गद्य में ऐसे लिखा जा सकता है। "छाया में एक घड़ी खड़ा होकर।" उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को गद्य के शब्दक्रम में लिखो।

उत्तर-

१- पुर तें निकसी रघुबीर-बधू,

उत्तर - सीता जी नगर से बाहर वन जाने के लिए निकलीं।

२- पुट सूख गए मधुराधर वै॥

उत्तर - मधुर होठ सूख गए।

३- बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।

उत्तर - कुछ समय तक श्रीराम ने आराम किए और अपने पैरों से देर तक काँटे निकालते रहे।

४- पर्नकुटी करिहौं कित है?

उत्तर - पत्तों की कुटिया अर्थात पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे ?

egyanarchive